ॐ

अतिशयकारी-विघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायकरचयिता

लघु सिद्धचक्र विधान

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती
अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता
बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

vidya suvrat sangh   vidya ke suvratsagar

कृति	:	लघु सिद्धचक्र विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	पावन वर्षायोग 2024, दमोह
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	20/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अरिहंत जैन (गोलू), सागर मोबाइल-8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान जुलाई २०२४ के अवसर पर

श्री देव पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर

दमोह (म.प्र.)

अन्तर्भाव

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धुवमचलमणोवमं गइं पत्ते।

इस गाथा वाक्य से परमपूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने अपने लेखन कार्य के पूर्व अपने इष्ट आराध्य स्वरूप अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठियों को नमस्कार पूर्वक स्मरण किया। इसी परंपरा से श्रमणचर्या में कोई भी कार्य हो उसके पूर्व सिद्धभक्ति पूर्वक अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठियों को स्मरण किया जाता है तथा आचार्य जिनसेन महाराज ने आदिपुराण के दूसरे भाग में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत लौकिक तथा पारलौकिक कार्यों के पूर्व भी सिद्ध विधान करने का उल्लेख किया है। इससे लगता है कि संसार में सिद्धभक्ति सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है।

जिन लोगों को प्रतिदिन या एक दिन में सिद्धों की आराधना करने का भाव हो उसी भावना से परमपूज्य आचार्य **श्रीविद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य जिनशासन प्रभावक **मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने **'लघु सिद्धचक्र विधान'** की रचना करके हम सभी साधकों एवं श्रावकों के लिए सिद्धों की भक्ति का नया आयाम दिया है। हम सभी कम समय में इस विधान के माध्यम से सिद्धों की आराधना करके अतिशयकारी लाभ को प्राप्त करेंगे।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा० ब्र० संजय, मुरैना

नित्यपूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
ऐसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥

कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

तेरी दो आँखें
तेरी ओर हजार
सतर्क हो जा

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय नवदेव समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय नवदेवेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (अवतार)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥

अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्‌गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्लीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के , विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण-१

ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(जोगीरासा)

दिव्य देशना से सुन रक्खा, शास्त्रों से यह जाना।
निज श्रद्धा से सीखा हमने, गुरुओं से पहचाना॥
तीन लोक में तीन काल में, सिद्धों सा ना दूजा।
सो नमोस्तु कर सविनय करते, सिद्धचक्र की पूजा॥१॥ ओम्...
मंगलमय प्रभु मंगलकारी, विघ्न अमंगलहारी।
कामधेनु सम कल्पवृक्ष सम, सर्वसिद्धि दातारी॥
चिन्तामणि सम पारसमणि सम, पारस हमें बनाते।
मुक्तिवधू के प्राण वल्लभा, चित् चैतन्य सजाते॥२॥ ओम्...
आत्म सिद्धि का लक्ष्य साध्य जो, करें सिद्ध की सेवा।
श्रमण चक्र अरिहंत चक्र में, शामिल हो स्वयमेवा॥
वह देवाधिदेव बन जाते, झुकें चरण में देवा।
कर्म नष्ट कर सिद्धचक्र पा, चखते निज का मेवा॥ ३॥ ओम्...
इस विधान से मैनारानी, पति का कुष्ठ मिटाई।
संग सात सौ हुए निरोगी, सबने महिमा गायी॥
निज घर भूले भटके जन को, देता यही सहारे।
सिद्धचक्र के इस वन्दन से, रोग कर्म भय हारे॥४॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
सिद्धचक्र को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥ ओम्..

(पुष्पांजलिं...)

नमो नमो - ४
नमो नमो श्री सिद्ध जिनं-नमो नमो श्री सिद्धाणं॥-२
नमो नमो - ४
एक शुद्ध निज पाए जो, दो-दो द्वंद्व नशाए जो।
रत्नत्रय प्रकटाए जो, चार कषाय नशाए जो॥
पंचम गति को पाए जो, सिद्धचक्र में आए वो।
नमो नमो श्री सिद्ध जिनं-नमो नमो श्री सिद्धाणं॥-२
नमो नमो - ४

❑ ❑ ❑

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

अर्हं बीजाक्षर महा, ब्रह्म वाच्य भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(शंभु)

ना द्रव्य मनोहर सँजो सके, ना मुनियों सा मन पावन है।
ना नन्दीश्वर हम पहुँच सके, ना सिद्धालय सा आँगन है॥
हम मैना सम मजबूत नहीं, मजबूर नहीं श्रद्धालु हैं।
सो सिद्धचक्र विस्तार रहे, दुख हरिये आप दयालु हैं॥

(दोहा)

यथाशक्ति से द्रव्य ला, लगा चंदोवा चंद।
मंडप मण्डल रच भजें, सिद्धचक्र स्वानन्द॥

श्री सिद्धचक्रयंत्र पूजन

स्थापना

(हरिगीतिका)

है रेफ ऊपर और नीचे, बीच में हंकार है।
र्ह्रं बीज अक्षर है कमल सा, अष्ट दल आकार है॥
स्वर और व्यंजन हर दिशा में, संधि पर शुभ तत्त्व हैं।
तट भाग में ओं क्रोम् वेष्टित, ह्रीं शोभित यंत्र है॥

(सोरठा)

भगें कर्म गजराज, सिद्ध यंत्र सिंहनाद सुन।
बनें सिद्ध सरताज, मुमुक्षु ऐसे कर नमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु)

जिन माँ बाबुल ने जन्म दिया, फिर मरण तुल्य पति दिए वही।
पर मैना भाग्य भरोसे थी, मिथ्या पथ पर पग बढ़े नहीं॥
पति स्वस्थ हुआ श्री जिनवर का, जब गंधोदक का छिड़का जल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, ले गंधोदक सा श्रद्धा जल॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्यों सत्य वचन बोली मैना, तो पिता चिता सम भड़क उठे।
पति तपित रोग जब शमित हुआ, तो लज्जित होकर पिता झुके॥
गुरु मंत्र मिला फिर सिद्ध यंत्र का, छिड़का शीतल सा चंदन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, कर शान्तीधारा का सिंचन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

उपचार रोग का क्या हो सो, मुनि सिद्धचक्र का कहे यतन।
जो आठ वर्ष तक करना है, त्रय अष्टाह्निक में पाठ भजन॥
पर पहली ही अष्टाह्निक में, वह रोग असाध्य हुआ था क्षय।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, पाने को जिन श्रद्धा अक्षय॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

फूलों सी मैना थी लेकिन, पति और सात सौ थे रोगी।
दुर्गंध न विचलित कर पाई, बस सेवा में थी सहयोगी॥
परवाह नहीं की काँटों की, सो रोग गया तन महक उठे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, दो धैर्य पुष्प हम झुके-झुके॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आहार दान कैसे करती, जब नहीं ठिकाना खुद का हो।
फिर भी आहार सदा दे फिर, पति का भोजन फिर खुद का हो॥
निज धर्म नहीं भूली मैना, सो हुई प्रशंसा के काबिल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस मुनि चर्या में हों शामिल॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हैं एक तरफ तो पिता वचन, हैं अन्य तरफ तो धर्म नियम।
जब कुछ ना सूझे मैना को, तो खोज लिए मंदिर भगवन्॥
यह जग तो एक समस्या है, मुनि समाधान सब प्रश्नों के।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, अब लिए सहारे दीपों के॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

अपने-अपने कर्मों से यह, सब दुनियाँ संचालित होती।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोया वही फसल होती॥
पति पिता पुत्र तो निमित्त हैं, सो मैना करती पाठ भजन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, यह धूप चढ़ा हों कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हैं पुण्य पाप के खेल यहाँ, कोई महलों में आराम करे।
कोई सुखी दिखे कोई दुखी दिखे, कोई वन-वन भटके काम करे॥
सब समता से मैना सहती, फल कर्मों के हों शीघ्र शमन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, फल अर्पित कर हो सिद्ध गमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

श्री सिद्धचक्र में श्रद्धा है, पर अष्ट द्रव्य सुविशाल नहीं।
जिन पूजन विधि का ज्ञान नहीं, संगीत गीत सुर-ताल नहीं॥
बस मैना सी दुख दर्द कथा, ना घटे सुखी संसार रहे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस सिद्धों का परिवार मिले॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मण्डल के आठ दिशाओं में अर्घ्य

(विष्णु)

सिद्ध अनाहत वाचक अर्हं, शब्द रहा प्यारा।
स्वयं सिद्ध अक्षरमाला से, खूब सजा न्यारा॥
आधा मात्रिक अर्हं पूजें, पूर्व दिशा आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पूर्व दिशि अर्घ्यं...॥१॥

वर्ग कवर्ग भजें आग्नेयी, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो आग्नेय दिशि अर्घ्यं...॥२॥

वर्ग चवर्ग भजें हम दक्षिण, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो दक्षिण दिशि अर्घ्यं...॥३॥

वर्ग टवर्ग भजें हम नैऋत, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो नैऋत्य दिशि अर्घ्यं...॥४॥

वर्ग तवर्ग भजें हम पश्चिम, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पश्चिम दिशि अर्घ्यं...॥५॥

वर्ग पवर्ग भजें हम वायव, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो वायव्य दिशि अर्घ्यं...॥६॥

भजें अनाहत य र ल व, उत्तर दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो उत्तर दिशि अर्घ्यं...॥७॥

भजें अनाहत श ष स ह, ईशान दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो ईशान दिशि अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

सिद्धयंत्र से हम तो भजते, सिद्ध वर्णमाला।
इस आश्रय से मुक्तिवधू की, होती वरमाला॥
सिद्धचक्र के अवसर में हम, शामिल हों आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्पूर्णवर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

सिद्धयंत्र पहले भजें, फिर दूजा हो कार्य।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोस्तु आर्य॥

(चौपाई)

सिद्धयंत्र ही महायंत्र है, न्यारा सा जयवंत तंत्र है।
सिद्धचक्र का महामंत्र है, भक्तों का तो मुक्ति मंत्र है॥१॥
सिद्धचक्र में सिद्ध वर्ण हैं, बीजाक्षरमय स्वर व्यंजन हैं।
अतः सर्व सम्पन्न यंत्र है, मंत्र तंत्र का जनक यंत्र है॥२॥
मैना ने पूजा जब इसको, अनुष्ठानमय ध्याया इसको।
गंधोदक जब छिड़का इसका, तभी स्वस्थ पति होता उसका॥३॥
कष्ट मिटा है कुष्ठ मिटा है, सात शतक का रोग मिटा है।
क्योंकि यंत्र तो सिद्धयंत्र है, कार्य सिद्धि का सफल यंत्र है॥४॥
शक्ति प्रदायक सिद्धयंत्र है, पाप व्यसन हर सिद्धयंत्र है।
यश-धन दायक सिद्धयंत्र है, संयम दायक सिद्धयंत्र है॥५॥
दुख संकट हर सिद्धयंत्र है, रोग-शोक हर सिद्धयंत्र है।
मोह कर्म हर सिद्धयंत्र है, धर्म मोक्ष दा सिद्धयंत्र है॥६॥

कर्मों को सिंह सिद्धयंत्र है, मुक्तिवधू दा सिद्धयंत्र है।
मुक्ती का धन सिद्धयंत्र है, नमोस्तु लायक सिद्धयंत्र है॥७॥
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है।
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है॥८॥

(सोरठा)

सिद्धयंत्र का ध्यान, मंगलमय मंगल करण।
अतः किया गुणगान, नमोस्तु कर पूजे चरण॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(त्रिभंगी)

श्री सिद्धयंत्र से, महामंत्र से, सिद्धचक्र को जो ध्यावें।
वे रोग नशा के, आतम ध्याके, कर्म नशा के सुख पावें॥
हो तुम प्रभु साँचे, जग यश वाँचे, खुश हो नाचें पर्व करें।
सो 'सुव्रत' ध्याएँ, तुम्हें मनाएँ, विद्या पाएँ मोक्ष वरें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

समुच्चय पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पाएँ, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

अष्टगुणी जित कर्म हैं, मोक्ष लक्ष्मी धाम।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

(लय-पिच्छी रे पिच्छी...)

मुक्ति रे मुक्ति ये तो बता तूने क्या जादू कर डाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥
नहीं अधिक ना कम परमातम, भव सागर के तीरा।
कुंदन सा कंचन झलका के, पाए आतम हीरा॥
सिद्धचक्र को जल अर्पित कर, पाएँ सम्यक् प्याला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कर्म हरण आनन्द वरण कर, ताप जिन्होंने छोड़ा।
उनकी छाया पाने हमने, नमोस्तु कर सिर मोड़ा॥
सिद्धचक्र को चंदन अर्पित, करें मिटे भव ज्वाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

सिद्ध रमे ज्यों निज में त्यों ही, सब जग आश्रय पाए।
अतः सिद्ध रूपी बनने को, हमने भाव सजाए॥
सिद्धचक्र को पुंज चढ़ाकर, मिले सुखों की शाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कमलाकारी कमल विहारी, ज्यों निर्लिप्त हुए हैं।
ब्रह्मातम के भाव भक्ति से, हमने चरण छुए हैं॥
सिद्धचक्र को पुष्प चढ़ाकर, मिले ब्रह्म जयमाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर के त्यागी निज के रागी, होते आतम स्वादी।
बड़भागी निज रस चखने की, दें पूरी आजादी॥
सिद्धचक्र को चरु अर्पित कर, पाओ भोग विशाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

रोग शोक आतंक दोष हर, ज्यों निज ज्योति जलाई।
भव गलियाँ तज शिव गलियों में, दीपावली मनाई॥
सिद्धचक्र को दीप भेंट कर, अंतस हुआ उजाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

लोकालोक निहारी आतम, क्यों ना हमें निहारो।
अपने जैसे कर्म काटकर, हमको भी तो तारो॥
सिद्धचक्र को धूप भेंट कर, रूप निखरने वाला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

तीन लोक के तीन काल के, जो धर्मी संसारी।
वो सब केवल तुमको चाहें, हम तो दास पुजारी॥
सिद्धचक्र को फल अर्पित कर, हो भविष्य ना काला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जड़ चेतन ज्यों अलग किए त्यों, सिद्धचक्र को पाए।
पर जड़ से चेतन पाने हम, अर्घ्य सँजोकर लाए॥
सिद्धचक्र को अर्घ्य चढ़ाकर, खुले मुक्ति का ताला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥ मुक्ति...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

पूर्णार्घ्य (नाराच)

विधान सिद्धचक्र का, रचाइये महा महा।
सु सिद्धचक्र के विधान, सा प्रभाव है कहाँ॥
तभी वियोग रोग भीत, भी दिखे नहीं यहाँ।
निजानुभूति प्राप्ति को, महंत भी टिकें यहाँ॥
कि और क्या कहें कथा, विनाश कर्म का करे।
प्रभाव देख भक्ति का, स्वरूप प्राप्ति हो अरे॥
इसीलिए रचा रहे, विधान भक्ति गा रहे।
कि सुव्रती सदैव धर्म, के लिए झुका रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

प्रथम अर्घ्यावली

(विष्णु)

हँसना रोना खाना पीना, मोह की सब माया।
मोहनीय हर प्रभु ने सम्यक्, गुण हीरा पाया॥
मोह त्यागने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणी मोहनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

ज्ञानावरणी के हर्त्ता ही, प्रभु ज्ञानानन्दी।
पर व्यवहार नयों से जानें, निश्चय स्वानन्दी॥
ज्ञानोदय को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणी ज्ञानावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

कर्म दर्शनावरणी हरकर, सब कुछ देख लिया।
निजदृष्टा के दर्शन को तो, माथा टेक लिया॥
सिद्ध दर्श को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणी दर्शनावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥३॥

निज से निज में मिल बैठे हैं, अन्तराय हर्त्ता।
अतुलवीर्य से विघ्न विनाशी, निज ज्ञातादृष्टा॥
विघ्नहरण को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणी अन्तरायकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

नाम कर्म जब मिटा दिया तो, रूपी का क्या काम।
बने अरूपी सूक्ष्म स्वरूपी, छोड़ दिया जग धाम॥
नाम मिटाने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणी नामकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

आयु कर्म की तोड़ शृंखला, अवगाहन पाए।
जिस से भिन्न-भिन्न होकर भी, नन्त समा जाएँ॥
हरे आयु सो सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणी आयुकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

गोत्र कर्म जब नहीं रहा तो, ऊँच नीच से क्या?
अगरुलघु गुण पाकर पाया, गुरुकुल सिद्धों का॥
गोत्र त्यागने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुणी गोत्रकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

नहीं असाता न हो साता, वेदनीय जब ना।
अव्याबाध सिद्ध सुख भोगें, जिसमें बाधा ना॥
वेदनीय हर सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वगुणी वेदनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं॥ ८॥

पूर्णार्घ्य

तुम अविनश्वर हम क्षणभंगुर, क्या नाते अपने।
फिर भी तुमसे मिलने के हम, सजा रहे सपने॥
स्वप्न पूर्ति को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी अष्टकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय अर्घ्यावली

सम्यग्दर्शन पाकर जिसने, विश्वशान्ति चाही।
विनय मोक्ष का द्वार रहा यह, मुक्तिवधू दायी॥
दर्शनविशुद्धि-विनय भाव से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नतागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

दोष रहित व्रत शील धारकर, आत्म शील पाते।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना, भव्य जीव भाते॥
आत्मशील से ज्ञान झील पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

भवतन भोग विराग धार कर, गुण संवेग धरे।
अपनी शक्ति बिना छुपाए, जो जन त्याग करे॥
यह संवेग धार बन त्यागी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं संवेग-शक्तितस्त्यागगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

अपनी शक्ती बिना छुपाए, करें तपस्या जो।
साधु समाधि के साधन से, हरें समस्या वो॥
करके तप वा साधुसमाधि, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप-साधुसमाधिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

रोगी संतों की सेवा कर, वैयावृत्य करें।
अर्हत् भक्ति करके अर्हत्, बनने भाव करें॥
वैयावृत्ती जिनभक्ति से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं वैयावृत्य-अर्हत्भक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

गुरु आचार्य भक्ति को करके, होते कार्य सफल।
उपाध्याय गुरु के वन्दन से, पाते मोक्ष महल॥
गुरु आचार्यभक्ति बहुश्रुत से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

धर्म प्रकाशक शास्त्र ज्ञान की, प्रवचन भक्ति करें।
यथा काल आवश्यक करके, निज कर्तव्य धरें॥
प्रवचनभक्ति आवश्यक कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-आवश्यक-अपरिहाणिर्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

प्रभावना जिनशासन की हो, यही साधना हो।
धर्मी से गो-बछड़े जैसा, प्रेम भावना हो॥
प्रभावना कर प्रेमभाव से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

हम हैं बिंदु तुम हो सिन्धु, मेल हमारा हो।
सो सोलह गुण के आश्रय से, तुम्हें पुकारा हो॥
अगर चाहते कुछ देना तो, निज-निज दो आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशभावनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं..।

तृतीय अर्घ्यावली

ज्ञान में चेतन ध्यान में चेतन, चेतन चेतन में।
भावशुद्धि को कर डाला सो, चेतन दर्शन में॥
परम शुद्धचैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

आजू चेतन बाजू चेतन, है आगे पीछे।
द्रव्य-भाव-नोकर्म हरा तो, चेतनमय जीते॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

ज्ञान परम पारिणामिक जो, शुद्ध ज्ञान धारा।
शुद्ध ज्ञान कर शुद्ध ज्ञान से, निज को शृंगारा॥
शुद्ध ज्ञान अविकारी पाने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

चेतन रूप जगत में सुन्दर, है सर्वांग सुखी।
जड़ में ऐसा रूप नहीं क्यों, पर में रहो दुखी॥
आवागमन जगत का तजने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

शुद्ध स्वरूप तत्त्व का प्यारा, मिश्रण से बहुरूप।
जड़ चेतन ज्यों अलग हुए तो, बनते सिद्ध स्वरूप॥
जड़ पुद्गल के भोग त्यागने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

भाव कर्म जब पूर्ण नशे तो, पाते शुद्ध स्वभाव।
सिद्धशिला अविनाशी पाकर, मिले मुक्ति की छाँव॥
सिद्धचक्र के भाव बनाकर, हम पूजें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

निराकार उपयोग शुद्धि से, शुद्ध करें अवलोक।
नजर लगे ना जिन्हें हमारी, सिद्धों का वह लोक॥
निज के अवलोकनकर्त्ता को, हम पूजें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं शुद्ध-अवलोकनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

बने वज्र सम अचल मेरु सम, सकल शुद्ध दृढ़ हो।
कितनी आँधी संकट आए, टस से मस ना हो॥
लोकशिखर के अविचल धामी, हम पूजें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं शुद्धदृढ़गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

हम तो एक जमीं के कण तुम, त्रय जग के स्वामी।
अक्ष बिना अध्यक्ष हमें दो, छाया वरदानी॥
अपने में अब हमें मिला लो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं शुद्ध सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ अर्घ्यावली

अवधिज्ञान से प्रज्ञाश्रमणी, भेद अठारह जान।
फिर भी आतम के आनन्दी, बने सिद्ध भगवान॥
बुद्धि ऋद्धि को नमोस्तु करके, केवली हों आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

अणिमा से तो कामरूप तक, ग्यारह भेदों से।
दूर हुए हैं साधक ऋषिवर, मिलते सिद्धों से॥
ऋद्धि विक्रिया को नमोस्तु कर, कष्ट टलें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

जल से लेकर अग्नि मार्ग जो, नव विहार करते।
ब्रह्म विहार किए तो जल्दी, मुक्तिवधू वरते॥
क्रिया ऋद्धि को नमोस्तु करके, हों मंगल आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं चारण(क्रिया)ऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

उग्र तपों से अघोरब्रह्म तक, सात भेद धरते।
फिर भी आत्मानन्दी बनकर, चिदानन्द चखते॥
तपो ऋद्धि को नमोस्तु करके, सुव्रत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

मनो वचन तन बल तीनों से, ध्यान पाठ तप हो।
किंतु थकें ना साधक स्वामी, वरण करें निज को॥
बल ऋद्धि को नमोस्तु करके, दृढ़ता हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं बलऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

औषध के आठों भेदों से, हरें व्याधि सारी।
उपाधियों के त्यागी करते, जिन समाधि प्यारी॥
औषधि ऋद्धि को नमोस्तु कर, स्वस्थ हुए आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

आशीर्विष से सर्पिस्त्रावी, षट् रस की ऋद्धि।
दया सिन्धु जब हमें दान दें, तभी हुई सिद्धि॥
रस ऋद्धि को नमोस्तु करके, दिव्य दर्श आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

गुण अक्षीणमहानस आलय, क्षेत्र ऋद्धि जो दो।
कटक पेटभर रहे साथ में, यही कृपा कर दो॥
अक्षीण ऋद्धि को नमोस्तु कर, सिद्ध छाँव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अक्षीणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

पूर्णार्घ्य

बुद्धि क्रिया और विक्रिया, तप बल औषध भी।
रस अक्षीण आठ मिलकर हों, पूरे चौंसठ ही॥
इन अनमोल रत्न को भज हों, ऋद्धि-सिद्धि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-ऋद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

पंचम अर्घ्यावली

कृत कारित अनुमोदन वाली, खूब योजनाएँ।
पूर्ण न हों तो अज्ञानी कर, खूब भरे आहें॥
सिद्धों सम तीनों को त्यागें, मिले क्षमा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं कृत-कारित-अनुमोदनारूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

क्रोध मान माया लोभों की, सभी कषायों को।
करके त्याग चेतना ध्यायें, निज के भावों को॥
सिद्धों जैसी त्याग कषायें, मिले दया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं क्रोध-मान-माया-लोभरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

मनो वचन काया वाली सब, त्याग क्रियायों को।
शुद्ध चेतना में रम बैठे, पाए स्वभावों को॥
सिद्धों सम मन वचन काय तज, हो करुणा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मन-वचन-कायरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

तज समरंभ समारंभारंभ, सभी कार्य त्यागे।
आकुलता व्याकुलता तजने, हम पीछे भागे॥
पापों के आरंभ त्यागकर, ताप टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं समरंभ-समारम्भ-आरंभरूप आस्रव रहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

नरक रूप परवशता तजकर, आत्म सहारे हो।
शुद्ध स्वयंभू को अम्बर भू, रोज पुकारे हो॥
विघ्न विनाशक सिद्ध स्वयंभू, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धस्वयंभूगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

योगी हो पर योग नहीं सो, परम शुद्ध योगी।
नहीं वियोगी ना संयोगी, शुद्ध आत्म भोगी॥
अपने योगी सहयोगी को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धपरमयोगी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

लख चौरासी के जन्मों को, यथाजात छोड़े।
शुद्धजात सो बन बैठे वो, हम तो सिर मोड़े॥
हुए दिगम्बर सिद्ध निरम्बर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धजातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

अब तक हमने तपे नहीं तप, तप ने हमें तपा।
सम्यक् तप के महा तेज से, तुमने ताप तपा॥
दुख संकट उपसर्ग विजेता, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धतपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

कृत कारित अनुमोदन त्यागें, चार कषायें भी।
संरम्भादिक तीन योग तज, आतम ध्यायें जी॥
पापास्रव तज सिद्ध शुद्ध को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं निरास्रव गुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

षष्ठम अर्घ्यावली

जहाँ देखिये वहीं विश्व में, पाँच ज्ञान छाये।
ज्ञान बिना तो स्वयं चेतना, कुछ ना कर पाए॥
ज्ञान आवरण हरे केवली, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

राज दर्श चाहें पर द्वारी, हमें न करने दें।
यों ही अनन्त दर्शन से जो, वंचित रखे हमें॥
नवों-दर्शनावरणी हर कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

खड्गधार पर लगी शहद को, चखना रसना से।
सुख-दुख के इन जगत रसों ने, निज के रस नाशे॥
वेदनीय की हरे वेदना, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

चंचल वानर मदिरा पी हो, गाफिल पर गाफिल।
मोही माया यों होगी तो, सुखी न हो मंजिल॥
मोहनीय अठबीस त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

जिसके कारण साँकल जैसे, जीव बँधे रहते।
चार आयु के अनन्त बंधन, भव-भव में सहते॥
आयु कर्म हर निज अवगाही, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

चित्रकार सम रंग बिरंगी, करे चित्र रचना।
इन्हें देख चेतन मत नचना, इनसे नित बचना॥
नामकर्म के सभी भेद हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

जिसके कारण ऊँच-नीच कुल, संसारी पाते।
फँसे गोत्र में होतृ करें क्या, बन्धन ही पाते॥
कुम्भकार सम गोत्र कर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

जिससे विघ्न उपस्थित होते, अच्छे कर्मों में।
पाँचों भेद न रुकने देते, सम्यक् धर्मों में॥
भण्डारी सम अन्तराय तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

द्रव्य भाव नोकर्म त्यागकर, बने जितेन्द्रिय जो।
उनके मोक्षमार्ग पर चलकर, भक्त अतीन्द्रिय हों॥
कर्मों के दुख-बंधन हर्त्ता, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

सप्तम अर्घ्यावली

घाति कर्म के पूर्ण विजेता, नेता शिवपथ के।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, रसिया निज रस के॥
जो छ्यालीस मूलगुण धरकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

शान्त राग अणुओं से निर्मित, पुरुष शरीरा हो।
जिन्हें रुचा ना सो पा बैठे, शुद्ध शरीरा को॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः भजकर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं सिद्ध सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

अरिहंतों सिद्धों के अनुचर, गुरु आचार्य रहें।
शिक्षा दीक्षा दें जिनमार्गी, आतम कार्य करें॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं आचार्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

नग्न दिगम्बर धर्म धुरंधर, पिच्छि कमण्डल ले।
द्वादशांग श्रुत की नैया से, भव के पार चले॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं उपाध्याय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

सम्यग्दर्शन की विद्या ले, ज्ञान हिमालय हैं।
जिन चारित्र समय सुव्रतमय, जो सिद्धालय हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं साधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

जड़ कर्मां के खेल खिलौने, कठपुतली सम हम।
हम जड़मूरत तुम चिन्मूरत, शुद्धमूर्ति हो तुम॥
अनेकांत जिनधर्मी स्वामी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

इन्द्री जन्य पराश्रित सुख तज, आत्मिक सुख पाया।
पापों की व्याकुलता त्यागे, शुद्ध करे काया॥
आगम से आतम को पाए, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसुखगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

कर्माश्रित है जगत अपावन, सिद्धचक्र पावन।
जग की पावन बस पावन पर, आप शुद्ध पावन॥
सिद्ध चैत्य को चैत्यालय में, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धपावनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

श्री अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु।
श्री जिनधर्म जिनागम प्रतिमा, मंदिर निज स्वादु॥
नव देवों को सिद्ध स्वरूपी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठी-नवदेवता रूप अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अष्टम अर्घ्यावली

ज्ञान और दर्शन उपयोगी, चेतन लक्षण हों।
परम शुद्ध उपयोग सिद्ध के, मिश्रित अपने हों॥
त्याग शुभाशुभ आदि-दिव्य को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

भोगी हो पर भोग नहीं हैं, जड़ चेतन सारे।
निजानुभूति निज रस भोगें, शुद्ध भोग प्यारे॥
स्थविष्ट को इष्ट सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धभोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

बहिरातम अंतरआतम तज, शुद्ध परमआतम।
अतः शुद्ध आतम कहलाते, खोजें भव्यातम॥
महा महा-अशोक गुणधारी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

एक बार ज्यों कर्म अलग हों, आतम सिद्ध बनें।
भेद मिटें सब खेद मिटें सब, भक्त प्रसिद्ध बनें॥
परमपूज्य श्री वृक्षादिक को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धपरमात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

घाति नशा फिर हरे अघाती, शुद्ध सिद्ध नामी।
शुद्ध हुए गर्भस्थ स्वयं में, सिद्धचक्र स्वामी॥
सिद्ध महामुन्यादि बने जो, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धगर्भगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' से, भेद न कुछ दीखे।
पर व्यवहार सिद्ध पद पाने, भक्ति पाठ सीखे॥
पूज्य असंस्कृत रूप सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

शान्त दूध में मिले मलाई, छाँव दिखे जल में।
ऐसे ही प्रभु शुद्ध शान्त हैं, सिद्धों के दल में॥
परमपूज्य वृहदादि सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धशान्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

जग में किसी तरह की उपमा, जिनकी हो न सके।
उपमातीत शुद्ध निरूप वे, रूपी हो न सके॥
सिद्ध त्रिकाली दिग्वासी को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं शुद्धनिरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

दूर हुए जो देह बाण से, कामबाण जीते।
करके समाधि निर्वाणी रस, आतम का पीते॥
नंतशक्तियाँ नंतगुणी को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अनंतशक्ति सम्पन्न अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

शब्द छन्द ना कह सकें, सिद्ध गुणों के कोश।
सिद्धचक्र की भक्ति से, मिटें विश्व के दोष॥

(ज्ञानोदय)

सिद्धचक्र की पूजा करके, गूँगे स्वर भरने लगते।
लँगड़े पर्वत पर चढ़ जाते, अंधे जग लखने लगते॥
अभुज सिंधु से पार उतरते, आधि व्याधि संकट टलते।
मंत्र जाप कर होम हवन कर, कर्म कटें आतम खिलते॥
सिद्धचक्र करने वालों को, बस यों आशीर्वाद मिले।
भोज्य पाँच सौ अस्सी विध के, षट् रस तज निज स्वाद मिले॥
मिलें न जब तक सिद्धचक्र में, सिद्धचक्र तब तक पूजें।
जिनशासन 'विद्या' गुरुवर को, नमोस्तु 'सुव्रत' के गूँजें॥

(सोरठा)

दो हजार चालीस, वृहद् रूप से पूजते।
चौंसठ लें लघु अर्घ्य, नमोस्तु के स्वर गूँजते॥
गुण कहना सम्यक्त्व, मोक्षतत्त्व दे दान जो।
अतः भक्ति कर भक्त, 'सुव्रत' पर प्रभु ध्यान दो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भक्त आत्म कर्तव्य कर, मुक्ति लक्ष्य को साध्य।
ऋद्धि सिद्धि निज शान्ति को, सिद्धचक्र आराध्य॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन में सिद्धचक्र की, महिमा जग विख्यात रही।
जिसमें मैना रानी वाली, कथा कहानी ज्ञात रही॥
रोग शोक दुख कर्म हरण को, सिद्धभक्ति पथ साँचा है।
आओ! मैना का यश वाँचें, जो गुरुओं ने वाँचा है ॥१॥
निपुणसुंदरी पहुपाल की, थीं दो प्यारी कन्याएँ।
सुरसुन्दरी मैनासुन्दरी, धर्मपंथ सब अपनाएँ॥
पितु ने कन्याओं से पूछा, बोलो तुम किसका खाती?
सुरसुंदरी कहे आपके, महाभाग्य का मैं खाती ॥२॥
मैना मैं ना खाऊँ आपका, अपने भाग्य का मैं खाती।
क्रोधित लज्जित मैना से हो, कलुषितु हुई पितु की छाती॥
बात गई पर एक बाग में, राजा को श्रीपाल मिले।
कुष्ठरोग से पीड़ित थे पर, धार्मिक थे खुशहाल मिले ॥३॥
उसे देख राजा ने सोचा, इससे ब्याह रचाना है।
भाग्य भरोसे मैना को भी, कुछ तो सबक सिखाना है॥
रानी मंत्री समझाये पर, राजा ने जिद ना छोड़ी।
मैना-कोढ़ी की लख जोड़ी, आँखों ने धारा छोड़ी ॥४॥
यदि दुर्भाग्य हुआ तो सुन्दर, पति कोढ़ी हो जाएगा।
यदि सौभाग्य हुआ तो कोढ़ी, कामदेव हो जाएगा॥
मुनिवर ने उपचार बताया, सिद्धचक्र का करो यतन।
त्रय शाखा की अष्टाह्निक में, आठ वर्ष तक करो भजन ॥५॥
यथाशक्ति से मैना रानी, सिद्धचक्र का भजन करे।
सिद्धयंत्र शान्तिधारा का, गंधोदक सब पर छिड़के॥
हाँ! पहले ही सिद्धचक्र में, सबका कुष्ठ समाप्त हुआ।
पति ने तनिक कनिष्ठा में रख, सबका वापिस गमन हुआ ॥६॥

निपुणसुन्दरी ने ज्यों देखा, मैना-पति सुंदर प्यारा।
तो वह बोली शायद मैना, छोड़ चुकी पति दुखियारा॥
और किसी के साथ इसी ने, अपना ब्याह रचा डाला।
लोक-लाज को पिता-वचन को, इसने दूषित कर डाला ॥७॥

तब श्रीपाल कुष्ट दिखलाते, तो माँ पश्चाताप करे।
मैना रानी पहुँच राज्य में, सिद्धचक्र का पाठ करे॥
तब श्रीपाल देह में लगता, कामदेव हों आ धमके।
सिद्धचक्र में नाम तभी से, मैना रानी का चमके ॥८॥

सिद्धचक्र के न्हवन हवन का, प्रभाव भय दुख रोग हरे।
और कहें क्या अधिक भक्ति से, मुनिपथ दे भव कर्म हरे॥
कुशल राज्य संचालित करके, मुनि दीक्षा श्रीपाल धरे।
यथाजात अरिहंत सिद्ध बन, मोक्ष सुन्दरी प्राप्त करे ॥९॥

अनन्तकेवली भी मिलकर के, सिद्धों के गुण कह न सकें।
'सुव्रत' फिर भी सिद्ध भक्ति बिन, इस जीवन में रह न सकें॥
वैसे तो निष्काम भक्ति है, फिर भी यदि देना चाहें।
तो सिद्धों सम मुक्ति मिले तो, हम सिद्धों के हो जाएँ ॥१०॥

(सोरठा)

है मुश्किल यह बात, ताराओं को गिन सकें।
अपनी क्या औकात, सिद्धचक्र के गुण कहें॥
फिर भी कर गुणगान, हमने की है अर्चना।
बनें सिद्ध भगवान, 'सुव्रत' की ये प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये समुच्चय-जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(शांतये शांतिधारा... पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

स्तुति-१

श्री सिद्धचक्र का पाठ, करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी।
हो विश्वशान्ति कल्याणी॥
ज्यों फल पाई मैना रानी, श्रीपाल बने मुक्ती धामी।
त्यों फल पाएँ हम काटें कर्म कहानी, हो विश्व...॥१॥
जिनशासन पर विश्वास करें, मिथ्यात्व त्याग संन्यास धरें।
आदर्श बनाएँ हम गुरु वा गुरुवाणी, हो विश्व...॥२॥
अब ज्ञाता दृष्टा बनने को, निज से निज में निज मिलने को।
निष्काम बनें शिव शुद्धातम के ध्यानी, हो विश्व...॥३॥
हम विषय कषाय विकार हरें, अज्ञान पाप अँधयार हरें।
सो रोग शोक आतंक दूर हों स्वामी, हो विश्व...॥४॥
भय विघ्न अमंगल टल जाएँ, मंगलमय मैत्री सब पाएँ।
मुनि 'सुव्रत' पाएँ गुरु की सिद्ध निशानी, हो विश्व...॥५॥

स्तुति-२ (संकलित)

श्री सिद्धचक्र का पाठ, करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी।
फल पायो मैना रानी॥
मैनासुंदरि इक नारी थी, कोढ़ी पति लख दुखयारी थी।
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी, फल पायो...॥१॥
जो पति का कुष्ठ मिटाऊँगी, तो उभयलोक सुख पाऊँगी।
नहिं अजा गल-स्तन वत् निष्फल जिंदगानी, फल पायो...॥२॥
इक दिवस गई जिन मंदिर में, दर्शन कर अति हरषी उर में।
फिर लखे साधु निर्गंथ दिगम्बर ज्ञानी, फल पायो...॥३॥
बैठी कर मुनि को नमस्कार, निज निंदा करती बार-बार।
भय अश्रु नयन कहि मुनि सों दुःखद कहानी, फल पायो...॥४॥
बोले मुनि पुत्री! धैर्य धरो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो।
नहिं रहे कुष्ठ की तन में नाम निशानी, फल पायो...॥५॥
सुन साधु वचन हरषी मैना, नहिं होंय झूठ मुनि के बैना।
करके श्रद्धा की सिद्धचक्र की ठानी, फल पायो...॥६॥
जब पर्व अठाई आया था, उत्सव-युत पाठ कराया था।
सब के तन छिड़का यंत्र न्हवन का पानी, फल पायो...॥७॥
गंधोदक छिड़कत वसु दिन में, नहिं रहा कुष्ठ किंचित् तन में।
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी, फल पायो...॥८॥

आरती-१

ओम् जय सिद्धचक्र देवा, स्वामी सिद्धचक्र देवा।
आरति करके तुम्हारी, भक्त करें सेवा ॥ओम् जय...॥
अष्टकर्म के नाशी, अष्टगुणी देवा। स्वामी अष्ट...
सिद्धशिला के वासी, चखो मुक्ति मेवा॥ ओम् जय...॥
बिन मूरत चिन्मूरत, चिदानन्द धामी। स्वामी चिदानन्द...
जो भी तुमको भजते, सिद्ध हों आगामी॥ ओम् जय ...॥
भक्त ना ज्यादा माँगें, आप ना कम देते। स्वामी आप...
रोग शोक बाधाएँ, यूँ ही हर लेते ॥ओम् जय सिद्धचक्र ...॥
राज न रमणी चाहें, मोक्ष न पद चाहें। स्वामी मोक्ष...
चरण मिलें बस तेरे, सिद्धभक्ति चाहें॥ ओम् जय...॥
सिद्धचक्र मैना सम, हम क्या कर पाएँ। स्वामी हम...
'सुव्रत' हैं ना मैना, फिर भी गुण गाएँ ॥ओम् जय...॥

आरती-२

जय हो सिद्धि के देवा, संसारी करते सेवा,
हम सब उतारें तेरी आरती, हो स्वामी, हम सब.....॥
ओम् जय सिद्धचक्र जिनदेवा, लोकशिखर वासी-२
मोक्ष मयूरी के तुम रसिया, हम हैं प्रत्याशी।
हो स्वामी! कर्मों को तुमने छोड़ा, दुनियाँ से मुख को मोड़ा,
प्रकटा ली शुद्धातम की भारती, हो स्वामी, हम सब.....॥
सिद्धचक्र को करके मैना, जगत प्रसिद्ध हुई-२
श्रीपाल की दुखिया आतम, देखो सिद्ध हुई।
हो स्वामी! अपनी भी झोली भर दो, अपने सम हमको कर लो,
करुणा तुम्हारी भव से तारती, हो स्वामी, हम सब.....॥
सिद्धचक्र को जो पूजें वो, होते मालामाल-२
कर्म नशें तो मोक्षसुन्दरी, खुद लाए वरमाल।
हो स्वामी! बनते वो ब्रह्मविहारी, सिद्धालय के अधिकारी,
मुक्ति भी निजगुण जिन पर वारती, हो स्वामी, हम सब.....॥

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित- अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः।प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशित्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्यपद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे - मध्यप्रदेशे- ......जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे.. मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥ (जल धारा...)
अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोस्तु बारम्बार॥ (चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ (दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (यः यः यः) (कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑